अभ्यर्थना

कवयित्री
श्रीमती उज्ज्वला पाण्डेय

MPASVO

अभ्यर्थना

कवयित्री
श्रीमती उज्ज्वला पाण्डेय
बी०ए०, बी०एड० (बी०एच०यू०)
C/O स्वामी आत्मानन्द तीर्थ
डी-60/23, छोटी गैबी,
वाराणसी-221010
(उ0प्र0) भारत

MPASVO
International Publication

MPASVO
International Publication

मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था ,बी 32/16 ए -फ्लैट 2/1 गोपाल कुञ्ज नरिया,लंका, वाराणसी

मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था की स्थापना का उ-ेश्य अन्तर्राष्ट्रीय विद्वानों द्वारा लिखित पुस्तकों, अप्रकाशित शोधों, मौलिक कृतियों, कहानियों, उपन्यासों, पाठ्यपुस्तकों, पाण्डुलिपियों का प्रकाशन, साथ ही शोध के नवीन बिन्दुओं का अध्ययन करना है। मनीषा प्रकाशन द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय शोध समग्र पत्रिका " आन्वीक्षिकी के साथ ही ए.जे.एम.ए.एम.एस एवं सार्क अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका" का प्रकाशन भी किया जा रहा है।

कार्यालय : वाराणसी, जौनपुर, इलाहाबाद, लखनऊ, महाराष्ट्र

MPASVO अर्थात् मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था। यह प्रकाशन एवं शोध के लिए स्थापित पंजीकृत, भारत सरकार द्वारा मान्यता प्राप्त स्ववित्तपोषित अन्तर्राष्ट्रीय संस्था है। इसकी पंजीकरण पत्रावली संख्या v-34654,रजि. 533/2007-2008 है।

© श्रीमती उज्ज्वला पाण्डेय

प्रथम संस्करण 2015, मूल्य : 151/-मात्र

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक के अन्तर्गत सभी अधिकार लेखक के अधीन हैं। इस पुस्तक के किसी भी भाग को किसी भी रूप में प्रयोग करना, फोटोकॉपी करना अथवा किसी भी जानकारी को बिना सन्दर्भ दिये प्रयोग करना दण्डनीय होगा। प्रस्तुत पुस्तक के अन्तर्गत किया गया शोध लेखक का व्यक्तिगत अध्ययन एवं दृष्टिकोण है, प्रकाशक प्रस्तुत पुस्तक के किसी भी तथ्य अथवा संवाद के लिए व्यक्तिगत रूप से जिम्मेदार नहीं है।

International Standard Book Number
ISBN-13 : 978-93-82061-19-9
ISBN-10 : 9382061199

टंकण : एडोब पेजमेकर,ए.पी.एस.-सी.-डीवी-प्रियंका 14 /16.8

पुस्तक संयोजन : महेश्वर शुक्ल

भारत में मुद्रण

मनीषा प्रकाशन एवं शोध विवेक संस्था
बी 32/16 ए -फ्लैट 2/1 गोपाल कुञ्ज नरिया,लंका, वाराणसी
सम्पर्क : मो. 9935784387

SWAMI NARAYAN TIRTHA VEDA VIDYA SANSKRIT CHARCHA KENDRA
(A Centre for Human Study)

SIDDHAYOGASHRAM
D-60/23, Chhoti Gabi, Varanasi,
U.P., INDIA. PIN-221010
Phone: +91-99363-55195

SHANKARMATH
Uttarkashi, Uttarakhand,
INDIA. PIN-249193
PHONE: +91-1374-222354

web: www.narayan-sanskriti-kendra.com • email: narayanyatra@gmail.com

Swami Atmananda Tirtha
Mathadhyaksha, Siddhayagashram & Shankarmath.
President, Swami Narayan Tirtha Veda Vidya Sanskriti Charcha Kendra

Date: Feb 15, 2015
फाल्गुन कृ0 11, विक्रम संवत् 2071

साधकों के जीवन में कई प्रकार के उतार चढ़ाव देखे जाते हैं। इन सभी के पीछे भांति भांति के क्रियाकलापों के द्वारा भिन्न-भिन्न रूपों में श्री गुरू-कृपा ही काम कर रही होती है। इसी क्रम में विभिन्न निमित्तों का आश्रय लेकर जो लिपिबद्ध संप्रेषण होता है, वही कविता के रूप में प्रकट होता है। मननशीलता एवं उच्च विचार मनुष्य का धर्म है किन्तु वर्तमान युग में सर्वत्र कठिन परिस्थिति और अस्थिरता व्याप्त है। इस स्थिति में मनुष्य का मननशीलता एवं उच्च विचार में रह पाना सहज व्यापार नहीं है। अत्यन्त आनंद और गर्व की बात है कि मेरी गुरू-भगिनी श्रीमती उज्ज्वला पांडेय इस परिस्थिति में भी अपने कवि-मानस को सक्रिय रखने में सफल हुई। इन के नाना जी श्री त्र्यम्बक आत्माराम भंडारकर जी भी संस्कृत के विद्वान् एवं कवि थे; और उन्होंने विद्यार्थी आत्मचरितम् तथा विवेकानंदचरितम् सदृश संस्कृत काव्य ग्रंथों की रचना की थी। इसलिये कविता (काव्य-प्रतिभा) इन की धमनी में प्रवाहित है। भविष्य में हम इनसे इस प्रकार के और भी प्रयासों की आशा रखते हैं।

आशा है हमारी गुरू भगिनी श्रीमती उज्ज्वला पाण्डेय का प्रस्तुत कविता-संग्रह ''अभ्यर्थना'' सभी के लिये उपयोगी होगा।

श्री श्री गुरू नारायण तीर्थ जी महाराज को स्मरण कर मंगल की प्रार्थना करता हूँ।

स्वामी आत्मानन्द तीर्थ

स्वामी आत्मानन्द तीर्थ

समर्पण

वागर्थाविव संपृक्तौ वागर्थ प्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वंदे पार्वती परमेश्वरौ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु
गुरुर्देवो महेश्वरः
गुरुः साक्षात् परंब्रह्म
तस्मै श्री गुरवे नमः

श्री श्री गुरुजी स्वामी नारायण तीर्थ जी महाराज के श्री चरणकमलों में सादर समर्पित

उज्ज्वला पाण्डेय
'उज्ज्वल'

प्राक्कथन

यह सम्पूर्ण जगत् ईश्वर की सृष्टि है। 'ईशावास्यं इदम् सर्वम्'। सम्पूर्ण जगत जड़-चेतन में व्याप्त होकर ईश्वर स्थित है। पंच महाभूत ये जैसे सृष्टि में व्याप्त हैं, उसी प्रकार इस मानव शरीर में भी हैं। 'यत् पिण्डे तत् ब्रह्माण्डे' के अनुसार पृथ्वी, जल, वायु, आकाश, अग्नि ये पंचतत्त्व समस्त प्रकृति को आच्छादित कर उसमें समाहित हैं। उसी प्रकार शिव तत्त्व, मातृ तत्त्व, गुरु तत्त्व, पालनकर्त्ता तत्त्व समष्टि को व्याप्त कर उसमें निहित है। कुछ इसी प्रकार ईश्वर, प्रकृति, ऋतुएँ, गुरु तत्त्व, मातृतत्त्व और शिवतत्त्व पर आधारित शब्द रचना और सृजन करने का यह प्रयास सार्थक हो ऐसी अभिलाषा के साथ श्री गुरु चरणों में क्षमापराधार्थ नम्र निवेदन। यह शब्द-रचना 'अभ्यर्थना' श्री श्री शिव जी, दुर्गा माँ और श्री श्री गुरु महाराज श्रीमत् स्वामी नारायण तीर्थ जी महाराज के श्री चरणों में सादर समर्पित है। मेरा यह प्रयास पूज्य श्रीमत् स्वामी आत्मानंद तीर्थ जी महाराज, सिद्धयोगाश्रम छोटी गैबी, वाराणसी के आशीर्वाद एवं श्री गुरुजनों, परिवारजनों और मित्र बंधुओं के अथक सहयोग व मार्गदर्शन से सम्पन्न हो सका है; अतएव मैं उन सब के प्रति अपना आभार प्रदर्शन करती हूँ। इन कविताओं को पढ़कर यदि मन में प्रसन्नता हो, भावाभिव्यंजना हो तो अपना यह प्रयास विशेष रूप से सार्थक समझूँगी।

उज्ज्वला पाण्डेय

'उज्ज्वल'

विषय सूची

क्र.सं.	शीर्षक	पृ.सं.
1.	जय हो भोलेनाथ	1-1
2.	हमारा देश	2-4
3.	नीली छतरी वाला	5-5
4.	आज घन आए	6-6
5.	जीवन संघर्ष	7-7
6.	नव गीत	8-9
7.	वृक्ष की आकांक्षा	10-11
8.	प्रकृति	12-12
9.	समाधान	13-13
10.	पीड़ित नभ	14-15
11.	बारात	16-16
12.	छिपे हुए पंछी	17-18
13.	प्यारे पंछी	19-20
14.	तरुणाई	21-21

15.	अभिमान	22-22
16.	रुई के फाहे	23-24
17.	विश्रान्ति	25-25
18.	ऊर्जा	26-26
19.	स्वजन	27-28
20.	सोच	29-30
21.	वर्षा गान	31-32
22.	विच्छेद	33-33
23.	वितृष्णा	34-34
24.	सुप्रभात	35-37
25.	उजाला	38-38
26.	ममतामयी	39-41
27.	चिड़िया का संसार	42-44
28.	एक कलम	45-46
29.	कृष्ण कन्हैया	47-47
30.	जय शिव शंकर	48-48
31.	श्री श्री गुरुदेव	49-49

32.	बीते दिन	50-51
33.	प्रकृति श्रृंगार	52-52
34.	व्यथा	53-54
35.	एक चूक	55-55
36.	शिशिर समीरण	56-56
37.	हमारे राम लला	57-57
38.	प्यारी तितली	58-58
39.	रागिनी	59-59
40.	मैं स्वयम्	60-60
41.	सरगम	61-61
42.	भवानी तारिणी माँ	62-62
43.	जगत वंदिनी माँ	63-63
44.	हनुमत् प्रभू	64-64
45.	श्रीराम शोभायतन	65-66

1. जय हो भोलेनाथ

सजा शिव का दरबार
बूटी छनत बारबार
होत शिव जी के जयजयकार
जय भोलेनाथ
मल के गुलाल अबीर
चलें गंगा जी के तीर
काशी शिव के निवास
नित नूतन उल्लास
उहाँ घाटन पै घाट
रतनारी (रसरंजित) हर बाट
निर्मल गंगा बहे जात
जय भोलेनाथ
काशी-महिमा अपार
कोई पावे नहीं पार
मन करै यहि बिचार
जय भोलेनाथ

2. हमारा देश

शांति की है बात करता
मचा रहा है शोर
अरे! हमारा देश यह जा रहा
किस ओर?
जा रहा किस ओर कि जनता
थकी हुई है,
हर त्यौहार पे सुन के शोर,
वो पकी हुई है।
मैं राह तक के देख रही हूँ
कब आएगी स्वर्णिम भोर!
अरे हमारा देश यह जा रहा
किस ओर
ध्यान लगा कर बैठे भगवन्
गौरी शिव हों, या हो हनुमत्
माता देतीं अभय वर
मुख मुद्रा से अविरल

मातु सरस्वती वीणा वादिनी
मैहर वाली माता हों
या हों विंध्याचल वाली माई
या हों वैष्णव माता
श्री राम हों या सीता मैया
या हों ब्रह्मा विष्णु महेश
सभी शांत हैं, सभी प्रसन्नचित
ध्यान लगा कर बैठे गुरुवर
देते यही संदेश
अगर शांत हो तभी प्रसन्न हो
पावोगे निज ह्रत् देश
गौतम बुद्ध हों चाहे ईसा
पैगंबर सब शांत
फिर क्यों लोगों अपने मन को
करते हो तुम क्लांत?
प्रभु से माँगूं ये ही वर कि
हो पाऊँ मैं शांत
और अविरल बंधी रहे यह

मन-प्रसाद की डोर।
शांति की है बात करता
मचा रहा है शोर
अरे! हमारा यह देश जा रहा किस ओर

3. नीली छतरी वाला

नील गगन है सबके ऊपर
नीली छतरी वाला
और साथ ही कंठ नील है 'शिव' का
उसके नीचे वृक्ष खड़े हैं
हरित वर्ण है उन का
उनकी शाखाएं हैं भूरी
गहरी भूमि तक वे पहुँचीं
देखो! माटी भूरे रंग की
कितनी सुन्दर रचना!
श्याम गगन है, हरित वृक्ष हैं
शाखाएँ हैं भूरी
मिट्टी ने भी उसी रंग में,
रंग कर के, कम कर दी
अपनी दूरी
रंगों का अभिराम सृजन है
रंग रंगीली धरती
इन रंगों में तुम भी रंग लो
पा जाओगे मुक्ति (शक्ति)

4. आज घन आये

आज घन आये
सखि! झूम कर छाए
मन के आकाश पर
सुगंधि के साए
प्रकृति की अणु रेणु
पुलकित हो नाची
धुलने लगे मन के मैल
बात कहूँ साँची
पक्षियों ने छेड़ी तान
नव पल्लव नव विहान
लगे चूमने गगन
पंछी मन भाए
आज घन आये सखि
झूम कर छाए

5. जीवन-संघर्ष

यूँ ही नहीं बनते शब्द
पीछे एक वेगवती नदी होती है
अश्रुओं की ही सही
यूँ ही नहीं बनता इतिहास
या वर्तमान,
पीछे एक सदी होती है
संघर्षों की ही सही

6. नव गीत

आज गीत गाने दो
मुझे गुनगुनाने दो
प्रकृति मुस्कुराई है
फिर बहार आई है
नव पल्लव नव किसलय
मन में उन्मेष नया
नये राग लाई है
नदी एक तपस्विनी
सबको करती है स्निग्ध
प्राकृतिक हवाओं में, नदी की
सदाओं में,
हो रहा मन मदमस्त
उत्कोच यह लुटाने दो
गीत नये गाने दो.......
जल में नौका विहार
मन के दुःख तार तार

अविचल विराट स्मृति
हृत् देश आज छाने दो
गीत नये गाने दो.....
श्री नर्मदा की जलधार
जिसका न पारावार
शांति की गहराई में
मुझे आज जाने दो
गीत नये गाने दो
मुझे गुनगुनाने दो

7. वृक्ष की आकांक्षा

खड़े हो तुम वृक्ष!
यूँ ही चिरकाल से
शाखा प्रशाखाओं के जाल में
तलाशते से स्वयं का अस्तित्व
सहते आतप ग्रीष्म शरद
करते कितनी ऋतुएँ व्यतीत
सरसराती हवा से करते हुए
वार्तालाप
खड़े हो वृक्ष तुम चिरकाल से
हो तुम स्वयं एक स्तंभ से
अडिग
छा जाना चाहते हो आकाश पर
अपनी शाखा भुजाएँ फैलाए
समेट लेने को आतुर
आकाश को
धरती में जड़ें हैं गहरी

नहीं छोड़ सकते निज आधार को
आकाश से भी है मित्रता
बाँध लेना चाहते हो
मानों प्रेम बन्धन में
करते हो नित्य ही धरती आच्छादित
पल्लव-उपहारों से
फल हैं तुम्हारे स्नेह सिंचित उत्कोच
समर्पित हैं सब जनों को
हमें है स्वीकार प्रभु के उपहार
वृक्ष तुम एक माध्यम हो
प्रभु प्रेम का!
खड़े हो तुम वृक्ष
यूँ ही चिरकाल से
धरती से आकाश तक
प्रसारित तुम्हारी चेतना
हे वृक्ष! तुम धन्य हो।

8. प्रकृति

जब भी पाती हूँ स्वयं को
मध्य प्रकृति के
स्वागत करती है प्रकृति
समस्त बंधन खोल कर
शामियाना तना प्रांगण में
पीछे उसके वृक्ष शाखाएँ
मानों खड़ी हैं स्वागत में
कि हे मानव! आ जाओ
प्रकृति की गोद में
वृक्ष के ऊपर है तना वितान,
आकाश का
कि मानों सुरक्षित हैं
वृक्ष उसकी छाया में
हे वृक्षों लहलहाते रहो इसी तरह
कि तुम्हारे लहलहाने से
खिलखिलाती रहे
मानवता

9. समाधान

किसी से कोई मतलब नहीं
कुछ नहीं है शेष
कहाँ है कोई?
मौन है मुखर
अश्रु की अविरल धार
कदाचित् कुछ पा लिया?
ब्रह्म है जिज्ञासा
मस्तिष्क कहीं खो गया
किस की करूँ पहचान!
क्या समाधान हो गया?
शांत है चिदाकाश
बस घूमते रहो मन।

10. पीड़ित नभ

कर नहीं पाई तुम्हें कविता समर्पित
वसंत इस बार
खेद है नहीं खोल पाई
मैं मन के द्वार!
काला धुआँ निकला है
चिमनी से
धुंध से अटा पड़ा है शहर
कुछ नमी ऐसी कि चिपकी
सी है धुंध की परत देह से
छूटती नहीं छुटाए
जहर बो दिया गया है
खेत में इस बार
खेतों से निकल जहर बुझी
भांप जाकर लील गई
है आसमान को

परेशां हो आसमान ने कर दी
है बारिश मानों सम्हाल
न पाया हो जहर की सौगात
आसमान कोई नीलकंठ नहीं,
जो समा लेगा विष को स्वयं में
कर नहीं पाई तुम्हें कविता समर्पित
खेद है नहीं खोल पाई
मैं मन के द्वार!

11. बारात

चाँद कुछ छुपा सा है, तारों भरी
है रात
नभ की शतरंज पर तारों की
है बिसात
विटप शांत, श्रम-युक्त
दिवस उष्ण बिता के क्लान्त
वायु के स्वरों ने छेड़ दिये गीत
माता प्रकृति लोरियों में
हैं बड़ी निष्णात
दीप से धधक रहे
जुगनू कई चमक रहे
रोशनी की मानों
आ रही बारात
चांद कुछ छुपा सा है,
तारों भरी है रात

12. छिपे हुए पंछी

कहाँ छिपे हो प्यारे पंछी
सामने आओ
लुक छिप लुक छिप गीत सुनाते
सामने आओ
वृक्षों की डाली पर बैठे
आसमान में उड़ते पंछी
कुहूँ कुहूँ की ध्वनि करते हो
पंचम सुर में तुम गाते हो
मुझको तुम क्यों कर छलते हो?
सामने आओ
वृक्ष तुम्हारे आश्रय स्थल हैं,
मीठे मीठे देते फल हैं।
प्रकृति में तुम रमे हुए हो
मुझसे ही बस शरमाते हो?
सामने आओ
मैं भी गीत सुनाऊँ तुम को

मैं भी कुछ लाऊँ खाने को
नम्र निवेदन है यह मेरा
फिर क्यूँ इतना इतराते हो?
देवी की भेंटे हैं, बजती
मधुर स्वरों में गुंजन करती
तुम भी आकर अर्घ्य चढ़ाओ
प्यारे पंछी सामने आओ
आकर मीठे गीत सुनाओ।

13. प्यारे पंछी

प्यारे पंछी कुछ तो बोलो
चुप सी एक लगा के बैठे
मुह को खोलो कुछ तो बोलो
चढ़े हुए तुम नीम वृक्ष पर
मंजरी जिसकी घिर आई है
पवन चली है बौराई सी
कली खिल रही इठलाई सी
राग रंग का समां बंधा है
स्वर में अमृत रस को घोलो
प्यारे पंछी कुछ तो बोलो
देख रहे हो समय काल को
पास न ठहरा कभी किसी के
गति विराट की नित्य निरंतर
अब तो मन की परतें खोलो
प्यारे पंछी कुछ तो बोलो

माना दुख का ओर न छोर
फिर भी रसवंती है भोर
मौन हुए हो किस कारण तुम
अंतरमन को स्वयं टटोलो
प्यारे पंछी कुछ तो बोलो

14. तरुणाई

आज तुम्हें देखा तो
फिर बहार आ गई
मन के धरातल पर
तरुणाई छा गई
फिर बहार आ गई
विगत वर्ष क्लांत हर्ष
पुनरावृत्त वेदना है
क्षण-क्षण है रुदन युक्त
मन को पीर भा गई
आज तुम्हें देखा तो
फिर बहार आ गई

15. अभिमान

अरे मन! वृथा अभिमान ना कर
क्या तुम्हारा था?
क्या तुम्हारा है?
व्यर्थ यों ही शान मत कर
क्या देह है अभिमान का
अब धरातल?
यह रूप है अधोगति
का रसातल?
जल धार में यों शस्त्र का
संधान मत कर
अरे मन वृथा अभिमान ना कर

16. रूई के फाहे

दूर देश से आए बादल
आसमान में छाए बादल
मैं भी उनसे पूछ रही हूँ
क्या संदेसा लाए बादल?
क्या दोगे तुम इस जग को?
आलोकित करते मग को
मंथर गति से चलते हो तुम
कितने सुंदर लगते हो तुम
मानों मुझसे पूछ रहे हों
अब बरसें या तब बरसें
जब भी बरसो, झूम के बरसो
अभिनंदन है हे बादल
नील गगन में श्वेत कांति युत
रूई के फाहे लगते बादल
तुम नाचोगे जग नाचेगा
झम झम बरसे जब बादल

क्या जाने वह कौन चितेरा,
तुम ही बतला दो हे बादल
उज्ज्वल छवि निरखत मन पुलकित
बरसो होकर श्याम हे बादल!

17. विश्रान्ति

कुछ पल मिलने गई स्वयं से
विश्रान्ति की स्थिति
कुछ पल समेटा स्वयं को
बिखरा हुआ कुछ
किया एकत्रित
मन चलायमान यों ही
व्यर्थ बेमतलब कुछ उलझा
हुआ सा
सोचा कोई राह तो पकड़ लूँ एक
मिल जाय सब कुछ
समेटा निज की मानों की
हो ऊर्जा संचित
शर छूटने को है अपने बाण से
आगे है अनंत-आनंद
भेद दूँ उस आनंद को
गोते लगा लूँ उस आनंद में
आते आते रह गया
शर संधान में अवश्य ही
कोई चूक हुई है।

18. ऊर्जा

ऊर्जा मौजूद है।
प्रयोग कैसे होता है?
सूर्य है प्रकाशवान
खुले हैं अग्नि के उत्कोच
संपादित कर लो पुण्य
या मूंद कर बैठे रहो नयन
प्रयोग कैसे होता है?
वायु बह रही निर्झर
ओढ़ लो शाल दुशाला
या हो जाओ निर्बन्ध
प्रयोग कैसे होता है
नदी है गतिमान
अंजुलि भर लो
रस सिक्त कर लो कंठ
या रह जाओ अतृप्त
प्रयोग कैसे होता है।

19. स्वजन

सोचती हूँ निकलूँ आज
स्वजनों की तलाश में
खो गये स्वजन सब
हा पुकारूँ किसे अब?
मन के मैल धोने को
स्निग्ध जल की आस में
सोचती हूँ निकलूँ आज
स्वजनों की तलाश में
रह रह आती याद
आश्रम की वह दीदी
सखियों सा प्रेम औ
माँ का वात्सल्य
पुरातन वो गलियाँ
ममत्व की आस में
सोचती हूँ निकलूँ आज

स्वजनों की तलाश में
उज्ज्वल मन चित्त लिये
ताकती हूँ इत उत
मिल जाय स्वजन कोई
आशा-विश्वास में

20. सोच

मित्र ने कहा बंधु कुछ सोच!
मैंने कहा सोच में ही हूँ।
बल्कि मैं स्वयं एक सोच हूँ
और यह सोच कर ही
गरिमा मंडित हूँ कि
मैं ईश्वर की सोच हूँ
तू भी ईश्वर ही की सोच है
किंतु विराट ने सबके लिये
अलग-अलग सोचा है
तभी तो सब की सोच भी अलग है
जैसा पहले विराट
ने सोचा,
सोचने हेतु उन्होंने एक अस्तित्व
(ब्रह्मा) की नियुक्ति की
स्वयं लंबी सोच (निद्रा)
में जाने के पूर्व।

मित्र ने पूछा क्या यह
जग भ्रम है?
मैंने कहा यह भ्रम भी
एक सोच ही है।

21. वर्षा-गान

पत्तों से छन छन कर
आती है बारिश
ठंडा सा अहसास देती है बारिश
बादलों ने अपना
उत्कोच लुटाया है
प्यासी धरती को
कितना हरषाया है
पेड़ों ने किया स्नान
मधुर गंध बिखेरी है
पल्लव पर टप-टप का गुंजित
है मधुर गान
तरु पल्लव नव किसलय
सभी हैं मगन यहाँ
पंछियों की लगती नित
इत प्रभात फेरी है

झिल्ली झनकार यहाँ
प्रीति की पुकार यहाँ
भक्ति का संगीत यहाँ
चंदन है रोरी है!
नदियाँ कल-कल निनाद
दूर करें सब विषाद
किसी ने की शंख-ध्वनि
और किसी ने
माला भी फेरी है।

22. विच्छेद

छूटता जाता है प्रतिपल
हर पल संसार का
रिक्त होता जाता प्रतिपल
यह अस्तित्व
छूटते जाते रिश्ते नाते
टूटते जाते बंधन निरंतर
परिलक्षित हो रहा
निर्जन वन सा यह जीवन
ओ रे मौन
चिंतित कैनो
एकाकी तुमी एशेछो
एकाकी तोमार गंतौब्यो
शिवेर नाम स्मर
जीवन मृत्यु भय हर
गुरेर नाम स्मर शौंशारेर तौर

23. वितृष्णा

रे मन! दूर कहीं रह आऊँ
बहुत हुआ इस देह का टंटा
और फिर सबसे वाक वितंडा
कहो कहाँ तक झेलूँ यह सब
चुप भी रह ना पाऊँ
रे मन! दूर कहीं रह आऊँ
आना जाना नित्य निरंतर
ठंडी छाँह न पाऊँ एक पल
खता बड़ी है क्षमा करें प्रभु!
ढाढस बंधा न पाऊँ
रे मन! दूर कहीं रह आऊँ।
रैन बसेरा कहाँ है अपना
जगत चरिंतन या है सपना
तेरे जनों पर भीर पड़ी है
किसको कहलाऊँ मैं अपना
अब तो एक पल चैन न पाऊँ
रे मन! दूर कहीं रह आऊँ।

24. सुप्रभात

बहुत सुबह दस्तक दी सुबह ने
खटखटाए जा रहा था कोई
सुबह सुबह
मैंने सोचा इतनी अलसुबह
कौन हो सकता है?
सुबह ही होगी
मैंने दरवाजा खोला तो देखा
सुबह ही थी
मेरा अंदाज़ा सही निकला
सुबह ने मुझे झिड़की दी
सोते रहते हो तुम लोग!
मैं तो कब की आ जाती हूँ
सोचा आज दस्तक दे ही दूँ।
सुबह आज पूर्ण यौवन पर थी
उसके साथ ही एक सुगंधि-युक्त
हवा का झोंका भी मेरे घर आया

मैंने सांस भर कर उस का
इस्तकबाल किया
यह गंध तो परिचित सी थी
पारिजात बेल नीम पीपल
सभी तो समाहित थे इस में
मेरे मन प्राण अनुप्राणित से हुए
इतने में ही प्रकाश की किरणें
भी चुपके-चुपके घर में घुसने लगीं
मैंने कहा वाह सुबह!
तुम कृतार्थ हो!
कितनी सौगातें लाई हो तुम!
ये तो मैं उठ गई।
सोती गर रहती तो
कितना मैं खोती?
सुबह ने कहा तभी तो मैं
खटखटाए जा रही थी
मैं तो तुम्हें बहुत कुछ देने को
तत्पर हूँ। तुम लो तो सही।
सुबह ने मुझसे मीठी झिड़की दी

मैंने कहा ऐ सुबह,
बहुत बहुत शुक्रिया
रोज आना इसी तरह कि
मैं भरती रहूँ अपना आंचल
तुम्हारी सौगातों से
सुबह ने कहा ये कोई मेरा
अहसान नहीं है
यह तो मेरी ड्यूटी है
मैंने पाया कि मेरी आँखें
कृतज्ञता में नम थीं।

25. उजाला

उजाला आये जीवन में!
अंधकार से चलें उजास में
हो उजास का विश्वास
आस जगे जीवन में
रो लिये बहुत
हँस लें आज
सो चुके बहुत
आए अब नव-विहान
गीतों के साथ आज
कदम ताल करने को
तड़पे अति आतुर मन
चल पड़ें सुपंथ पर
कर के श्री गुरु-ध्यान
आगे है भव-असार
श्री गुरु ही करें बेड़ा पार
उज्ज्वल मन वृथा फिरे
श्री राम नाम से पाथर तरे
तो फिर काहे को डरे

26. ममतामयी

बुलाती हूँ माँ को
कहाँ हो ओ माँ!
उत्तर में चिड़िया चहचहाती है
माँ क्या तुम बन गई हो
मैना का मधुर कंठ स्वर?
बुलाती हूँ माँ को
सूर्य का तेज आच्छादित
कर फैला है जग को
माँ क्या तुम सूर्य-किरण
बन छा गई हो?
बुलाती हूँ माँ को
वृक्ष की पत्तियाँ सरसराती हैं
माँ क्या तुम ही हवा में
समाहित होकर कोमल स्पर्श
देती हो मुझको
कहाँ ढूँढूं तुम्हें माँ!

बहुत याद आती हो मुझको
माँ की स्मृतियों के स्रोतों
से फूटकर बह चली नयनों
से अश्रु धार
काश धरती में समा जाए
बह कर यह धार
और बन जाय अश्रु भी
प्रकृति का अंश
जैसे प्रकृति के हर अंश में
माँ का ही दुलार होता परिलक्षित
पुकारती हूँ माँ को
कहाँ हो ओ माँ।
कहीं से नहीं कोई उत्तर
मन है बेचैन और आत्मा भी
इसी आत्मा को चोला देकर
नौ माह रक्खा अपनी कोख में
सोचती हूँ कितनी सुरक्षित थी
उस परिवेश में

अब तो संसार के झंझावातों से
टकरा कर थक गई हूँ माँ!
दृष्टिपथ में आ जाओ माँ
तुम्हें निहार कर ही निहाल हो लूँ
हो जाऊँ विराट् के प्रति
कृतज्ञ

27. चिड़िया का संसार

चह चह करती आजा प्यारी
चिड़िया मेरे पास
तुम्हें दूँगी दाने
दाना लेकर अपनी सृष्टि रच लेना
है तुम्हारा सम्पूर्ण वातास
हो तुम परम स्वतंत्र
आज इस डाल कल उस डाल
मैं तो बंधन में हूँ प्यारी चिड़िया
मेरा तो एक ही यह ठिकाना
यहीं से लेना है मुझे जग का नजारा
और तुम!
तुम्हारा है सारा जहाँ
यहाँ बेल है पीपल है नीम है।
आज इस घर के आँगन को
मधुर स्वरों से करती हो झंकृत
कल कहीं और

सबको देती हो खुशी का अहसास
मन कर देती हो गुलज़ार
एक दाना खाकर कितना कुछ देती हो
क्या कहूँ?
सुकून, आराम, निश्चिंतता, निश्चलता
हल्कापन!
और कितनी प्रशस्ति करूँ तेरी!
विराट प्रभु की छोटी सी रचना!
कितना उल्लास भर देती हो क्लांत मन में
शांत प्रकृति को कर देती हो शब्दित
ताल मय! संगीत मय!
अब तो आ जा मेरे पास ओ प्यारी
गौरैया!
अपनी संगीत मंजूषा से कुछ तो
स्वर-लहरियाँ मुझे भी दे दो
याचना करती हूँ तुझ से
हर ऋतु के गीत गाती हो तुम!
कितने गीत हैं तुम्हारे पास?

शरद, वसंत, हेमंत, शिशिर!
हर ऋतु के गीत
गायिका हो तुम सिद्धहस्त
सिखाओगी न मुझे भी कोई गीत
दूँगी तुम्हें दाना
दाना लेकर अपनी सृष्टि रच लेना
कर लेना विराट का अभिनंदन
मैं भी हो जाऊँ निश्छल निश्चिंत
विराट् की सरसता से मैं भी
हो पाऊँ भिज्ञ आनंदमय!

28. एक कलम

कलम जो चलती गई
सदियों से
लिख डाले कितने
इतिहास पुराण
ब्रह्म वाक्य वेद वेदांग
ऋषि मुनियों की ऋचाएँ छंद
मन के कितने अन्तर्द्वन्द्व
कितने अनछुए पहलू
सभी होते रहे अभिव्यक्त
कलम जो चलती गई
चाहे श्री गीता का ज्ञान
चाहे हो भागवत् पुराण
मेघदूत हो कालिदास का
तुलसी को मानस ज्ञान
होता रहा सभी परिलक्षित
दिव्य चक्षु से मानव विस्मृत

अंतरपट को देती खोल
मैं भी तो रह गई अबोल
एक कलम जो चलती गई
मन के भेद खोलती गई

29. कृष्ण-कन्हैया

कान्ह हमारे वंशीधर हैं
स्वर्ण मुकुट है शोभित सिर पर
बाजूबंद बाहों की शोभा
मुक्तामणि की लड़ी कमर पर
तिरछी चितवन वर है
कान्ह हमारे वंशीधर हैं।
डाल गले में माल वैजन्ती
काली कमली धर हैं।
कृष्ण वर्ण है स्वयं श्याम का
औ धारण पीतांबर है
नील पीत मिल हरी हो गया
अइसे धुरंधर हैं
कान्ह हमारे वंशीधर हैं
राधा सखि संग रास रचाते
ग्वालन के प्रियकर हैं।
मात यशोदा के लल्ला हैं
भक्तन के श्रीधर हैं
कान्ह हमारे वंशीधर हैं।

30. जय शिव-शंकर

हर हर हर हर
जय शिव शंकर
भोले डमरू धारी
तीन नेत्र हैं भाल चन्द्र हैं
तांडव कर त्रिपुरारि
सुत गणेश औ कार्तिकेय हैं
महिमा इनकी न्यारी
मातु गौरी की छटा निराली
मूरत भावै प्यारी
जटा जूट है गंग भाल शिव
बाघम्बर हैं धारी
नाम सुमिर करूँ पार लगावैं
भोले विपत हमारी
उज्ज्वल प्रभु किरिपा करि दीजौ
जाऊँ वारी वारी

31. श्री श्री गुरुदेव

क्षमा करो अपराध हमारे
श्री गुरुवर बलिहारी
अति हठी हूँ शून्य विवेकी
समझी नहीं समय की चाल
अब बंध कर छटपटा रही हूँ
श्री गुरु जल्द करें पड़ताल
क्षमा मांगती बारंबार
प्रभु मन में अब करें विचार
कुंद बुद्धि हूँ दोष युक्त हूँ
दंड न दें प्रभु बनें दयाल
बार बार कर जोरि मनाउँ
हुई गलती पुनि ना दोहराउँ
श्री गुरु ही हैं अब रखवाल
उज्ज्वल विनय मान
अब लीजै
कर दीजै मेरो बेड़ो पार।

32. बीते दिन

कितने अच्छे थे, बीते हुए वे प्यारे दिन
माँ की छत्रछाया में निश्चल वो बचपन
निर्द्वन्द्व रहना न चिन्ता न माया
बगीचे में घूम घूम कर
तितली पकड़ना
प्रकृति की छाया में
निस्संग रहना
ठंड की धूप में
पाँव पसार बैठना
छीलने दी मटर माँ ने
छीलना कम खाना ज्यादा
यूँ ही दौड़ते दौड़ते
माँ से लिपट जाना
भीनी भीनी खुशबू में
सराबोर होना
गुड्डा गुड़िया के खेल हजारों खेलना

अरे खेलती ही रहोगी? खाने पीने की नहीं सुध?
पढ़ना लिखना है या नहीं?
माँ का लगातार पुकारना, रोटी चीनी घी का कौर
बलपूर्वक खिलाना, खा पीकर मेरा यूँ ही आँगन में
टहलना, याद आता है बहुत
विकल हो जाता है मन, स्मृतियाँ ही हैं शेष
हाय वे मेरे बीते हुए दिन वे प्यारे पल छिन

33. प्रकृति-शृंगार

वाह! प्रकृति आज
तेरा शृंगार!
पारिजात बेल नीम
इनकी है बनी टीम
पीपल औ तुलसी की
छटा ही निराली है
हरसिंगार अलंकृत अति
वेल की मदभीनी गंध
पीपल की उपस्थिति दिव्य
औ तुलसी की पवित्र गंध
इन सब की उष्मा ने
वातावरण बनाया है
कहो तो कहाँ जाऊँ मैं?
इन सब के घेरे में
इन सब के बंधन ने
तन मन को बांधा है
आया है नव निखार
वाह प्रकृति आज तेरा शृंगार।

34. व्यथा

सोने जैसे दिन थे मेरे
चाँदी जैसी रातें
प्रकृति ने न जाने कितनी
दी मुझको सौगातें
पंख लगाकर उड़ती थी मैं
पाँव न पड़ते जमीं पर
इधर उधर मैं घूमा करती
जब देखो तब सर-सर
कालचक्र यह कैसा घूमा
देख चकित मैं ताकूँ
हाय व्यथित मैं इतनी हूँगी
समय-गति ना भाँपूँ
स्वजन गये सब रिश्ते टूटे
चारों ओर अंधेरा
एक किरण भी नहीं प्रकाश की

जिसने मुझको घेरा
माथे पर यूँ हाथ दिये मैं
सोचूँ अपनी किस्मत
कब आयेगा वो शुभ दिन प्रभु
जब हो सब विधि सम्मत।

35. एक चूक

हुई एक चूक
घट गया अघट
बस एक चूक
रह गई मूक
नियति का जो भी लेखा था
प्रकृति ने सब कुछ देखा था
जब अन्तर्मन में उठी हूक
बस एक चूक
रह गयी मूक
मन में उठता था नित विषाद
बंद हो गये सब संवाद
तब निर्झर फूट उठा था एक
आँखों के अश्रु गये सूख
बस एक चूक
रह गयी मूक
अब संवाद करो मुझसे प्रभु!
वार्तालाप करो दो टूक
बस एक चूक

36. शिशिर समीरण

शिशिर समीरण क्यों बहती हो?
कभी-कभी तुम चल देती हो
कभी कभी यूँ थम जाती हो
क्या रहता है तुम्हरे मन में
चल देती हो निर्जन वन में
कभी कभी यूँ ही इठलाती
मुझको तुम हरदम बहलाती
क्या तुम मेरी सखि बनोगी?
मुझसे अपने भेद कहोगी?
सखी तुम्हारी बनना चाहूँ
सभी कहूँ कुछ छुपा न पाऊँ
जानो तुम सब अंतरमन की
शुभ चिन्तक हो तुम जन जन की
क्लेश हरो अब मेरे मन का
गीत सुनाओ सुख वर्धन का
उज्ज्वल अपनी विनती तुम्हें सुनाऊँ
तुमसे ही मैं जीवन पाऊँ

37. हमारे राम लला

घुरुटन चलत
हमारे राम लला
छैल छबीले
हमारे राम लला
कौशल्या के प्यारे
हमारे राम लला
चरिउ भइयन में न्यारे
हमारे राम लला
कटि पीतांबर पावों में पैंजन
छोटी धनुकिया लिये
हमारे राम लला
छम-छम करते घूमें आंगन आंगन
देहरी में अटकावत
हमारे राम लला
ऐसी शोभा निरखि
जाऊँ वारि वारि अति
उज्ज्वल के जीवन धन
हमारे राम लला

38. प्यारी तितली

प्यारी तितली रंग बिरंगी
दूर देश से आई हो तुम
दूर कहाँ तुमको जाना है?
बैठो यहीं बिताओ सर्दी
मुझको भी तो बहलाना है
माना तुम्हरे मित्र और हैं
नये नये अभिराम ठौर हैं
हर पल्लव पर तुम जाती हो
अक्सर यूँ ही इठलाती हो
हर मौसम के नव गीतों को
कितना सुन्दर दोहराती हो
बाग-बाग औ उपवन-उपवन
फैला रही हो अपना यौवन
मुझको अपने पास बुलाओ
अपने मन की व्यथा सुनाओ
रंग बिरंगी प्यारी तितली
उज्ज्वल छटा बिखेरे तितली।

39. रागिनी

आज कौन सी रागिनि गाऊँ
स्वर कैसे झंकृत कर पाऊँ
वीणा मीठे स्वर देती है
एकाकीपन हर लेती है
पर कैसे मन को समझाऊँ
आज कौन सा राग बजाऊँ
वैसे बहुत मधुर से स्वर हैं
जय जयवंती जौनपुरी हैं
आसावरी विहाग अलग हैं
भैरवी की महिमा ही विलग है
सम्मोहक भैरव का रूप
है केदार अत्यन्त अनूप
राग रागिनियों का नहीं कोई अंत
हैं सदा से ही ये अनंत
सागर ही से मोती पाऊँ
आज कौन सी रागिनि गाऊँ?

40. मैं स्वयम्

अतीत के झरोखे से झांकू मैं
छोटी सी प्यारी सी गुड़िया सी मैं
आये कितने औ व्यतीत हुए कितने
काल के चक्र खण्ड
घूमती ही गयी पृथ्वी की तरह मैं
कितने हो राग अनुराग
लाड़ दुलार के कितने ही पल
निरंतर गर्म उष्णा संजोती गयी मैं
सुखों की वर्षा हो या
रुदन की आई हो बाढ़
सदैव ग्रीष्म आतप
सहती ही गई मैं
सहसा एक झंझावात
जीवन में अकस्मात
हाय कैसा ये उन्माद
बिखरती ही गयी मैं
मंद होवें ये उत्पात
प्रभु दूर करें अवसाद
अंजलिबद्ध हो झुकाये माथ
प्रार्थना की मुद्रा में बैठी रही मैं।

41. सरगम

सात सुरों की होती सरगम
सप्त सुरों को बतलाती है
गाओ तो मन को भाती है
ऐसी रंग रंगीली सरगम
सात सुरों की होती सरगम
षड्ज ऋषभ गंधर्व औ मध्यम
पंचम धैवत सुर निषाद का
साथ रहें तो सप्तक है यह
चढ़ कर ऊपर सारेगम
उतरो नीचे मगरेसा
आरोहण औ अवरोहण की
सीढ़ी हम को समझाती है
सात सुरों की है ये सरगम

42. भवानी तारिणी माँ

महिषविमर्दिनी दुर्गा मइया
हमरी नइया पार करो
अभय मुद्रा है तेरी मइया
हस्त त्रिशूल तुम्हारे
मुंडमाल गले में है
और सब ही तेरे सहारे
खड्ग कपर्दिनी धारिणी मइया
सिंह चले मतवाले
तेरे जनों पर भीर पड़ी है
आकर मुझे उबारो मइया
भव बंधन से तारो
महिष विमर्दिनी दुर्गा मइया
हमरी नइया पार करो।

43. जगदवंदिनी माँ

अभिनंदन हो माँ तेरा
अभिनंदन हो
दीपशिखा सी चलित तड़ित सी
विद्युत दीप फलित सी
जगवंदन हो माँ तेरा
जगवंदन हो
महिषविमर्दिनी खप्पर धारिणी
काल कपालिनी मुंड विहारिणी
हृत्-चिन्तन हो माँ तेरा
हृत्-चिन्तन हो
सदाशिव संगिनी मुक्त दयानी
तारिणी भव भय हारिणी
यह जग नंदन वन हो मइया
यह जग नंदन वन हो
माता अभिनंदन हो तेरा
मइया अभिनंदन हो।

44. हनुमत्-प्रभु

हनुमत् प्रभु बल पुंज हैं
अतिशय करुणा पुंज हैं
बल बुधि विद्या के दाता हैं
हर लेते सब क्लेश हैं
वज्र हस्त हैं ध्वजा संग है
मूंज जनेऊ सज्जित है
संजीवन पर्वत को लाए
लक्ष्मण के रखवाल हैं
अति लघु रूप सिया के सन्मुख
विशद रूप लंका कुल घातक
बाल रूप में भानु-ग्रसैया
सागर पार करैया हैं
भूत पिशाच सब दूर करे हैं
पार लगाते नइया हैं
संकट बाधा दूर भगाते
ऐसे संकट-मोचक हैं
हमरी बाधा दूर करें प्रभू!
उज्ज्वल शत नत मस्तक है।

45. श्री राम शोभायतन

श्री राम प्रभु की शोभा
अतिशय ललित ललाम
केहरिस्कंध कटि पीताम्बर
कराग्रे धनुष औ बाण
श्री राम प्रभु की शोभा
अतिशय ललित ललाम
हनुमत् स्वामी श्री सीतापति
जय जय राजा राम
श्री राम प्रभु की शोभा
अतिशय ललित ललाम
सहज उदार कपट छल हीनं
मैत्री प्रेम करुणा करणीयं
भातृ वैदेही संग प्रभु
बाण चाप धर राम
मेरे हृदय-पटल पर प्रभु
बसे सदा ही पूरणकाम

श्री राम प्रभु की शोभा
अतिशय ललित ललाम
उज्ज्वल विनय मान अब लीजै
दै दीजै अब मोहे विश्राम

लेखिका परिचय : लेखिका का जन्म स्थान वाराणसी है। घर में प्रारम्भ से ही साहित्यिक वातावरण था जिस का मानस पर अमिट प्रभाव पड़ा। शिक्षा दीक्षा भी काशी में हुई और इन्होंने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय से बी0ए0 एवं बी0एड0 तथा प्रयाग संगीत सम्मेलन से संगीत प्रभाकर की डिग्रियाँ प्राप्त की।

गुरुजनों के आशीर्वाद एवं स्नेह से साहित्य के प्रति अभिरूचि उत्पन्न हुई संगीत के प्रति भी झुकाव रहा तथा विषयों में संस्कृत एवं अंग्रेजी भाषाओं का भी अध्ययन किया।

प्रायः प्रकृति ही सृजन की प्रेरणा बनी। विभिन्न स्थानों पर निवास का अवसर मिला जहाँ नदियाँ थी जैसे काशी में श्री गंगा जी जबलपुर में श्री नर्मदा जी एडमंटन (कनाडा) में सेस्केचवन और उत्तरकाशी में श्री भागीरथी जी। नदियों के निश्छल प्रवाह और सानिध्य ने भी साहित्य-सृजन हेतु प्रेरित किया।

पुस्तक के विषय में :

प्रस्तुत पुस्तक **''अभ्यर्थना''** श्रीमती उज्ज्वला पाण्डेय 'उज्ज्वल' की स्वरचित कविताओं का संग्रह है। ये कविताएँ विभिन्न प्रकार के भावों की अभिव्यक्ति हैं। भाषा सुस्पष्ट एवं सरल हैं इसमें कई कविताएँ गेय भी हैं। इन कविताओं में प्राकृतिक उपादानों का आश्रय लिया गया है। आशा है सुधी पाठक इसे उपयोगी पायेंगे। यदि कविताओं को पढ़कर प्रसन्नता होगी तो यह प्रयास सार्थक माना जायेगा।

प्रकाशक

ISBN-978-93-82061-19-9

MPASVO
International Publication
www.anvikshikijournal.com
maneeshashukla76@rediffmail.com

97893820611 99

₹ 151/-